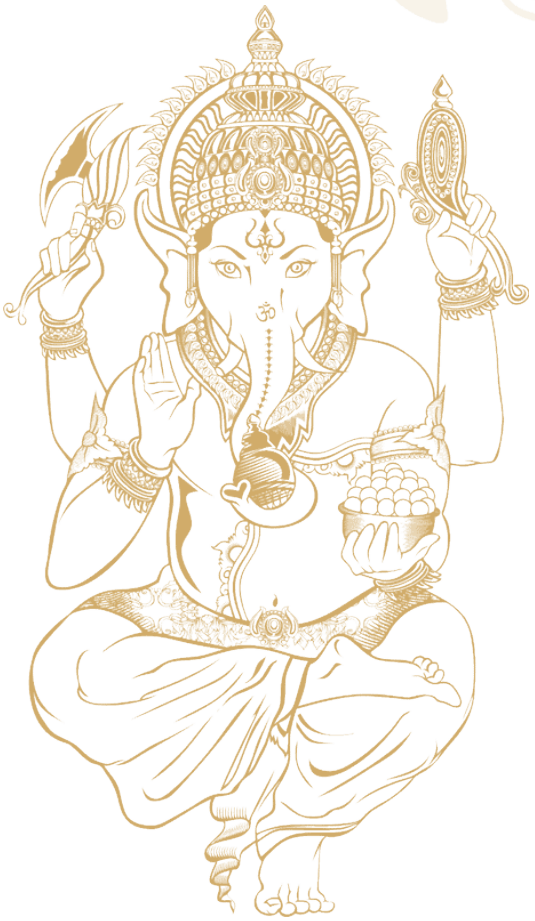

25 Dec 2025

05:30 PM

Bhiwani

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120716701

तिथि 25/12/2025 **समय** 17:30:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Bhiwani **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:17
अक्षांश 28:50:00 उत्तर **रेखांश** 76:10:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:25:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	23:21:41 घं
वेलान्तर	00:00:05 घं
सूर्योदय	07:16:27 घं
सूर्यास्त	17:34:43 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	6
नक्षत्र	शतभिषा
योग	सिद्धि
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सा-सात्विक
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	शुक्र
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

राहु 11वर्ष 4मा 3दि

राहु

25/12/2025
29/04/2037

	00/00/0000
	25/12/2025
शनि	11/04/2027
बुध	29/10/2029
केतु	16/11/2030
शुक्र	16/11/2033
सूर्य	11/10/2034
चन्द्र	11/04/2036
मंगल	29/04/2037

योगिनी

धान्या 1वर्ष 10मा 20दि

धान्या

25/12/2025
16/11/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	25/12/2025
उल्का	17/05/2026
सिद्धा	16/12/2026
संकटा	16/08/2027
मंगला	16/09/2027
पिंगला	16/11/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			09:37:33	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	गुरु	---	0:00			
सूर्य			09:43:28	धनु	मूल	3	केतु	शनि	मित्र राशि	1.23	पुत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			11:35:52	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	सम राशि	1.10	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	13:30:00	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि	1.17	भ्रातृ	भ्रातृ	साधक
बुध			24:38:47	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	सम राशि	0.84	अमात्य	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		27:57:41	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.46	आत्मा	धन	सम्पत
शुक्र		अ	06:48:18	धनु	मूल	3	केतु	राहु	सम राशि	1.08	ज्ञाति	कलत्र	प्रत्यारि
शनि			01:36:01	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.37	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		17:01:45	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		17:01:45	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

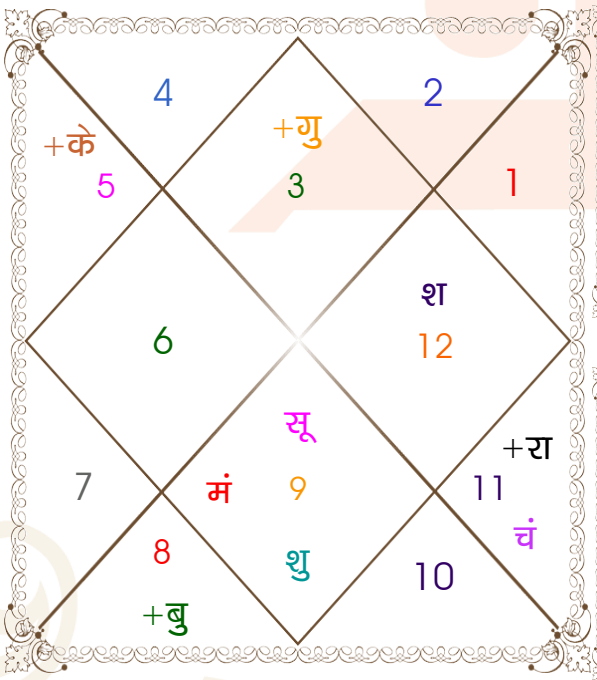

चन्द्र कुंडली

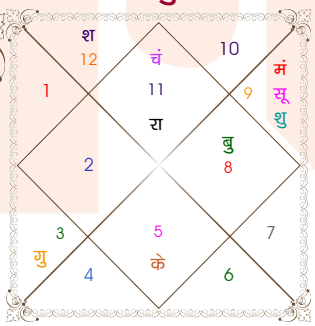

नवमांश कुंडली

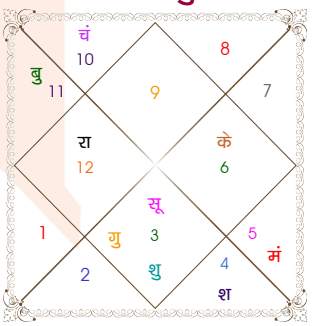

सर्वाष्टकवर्ग

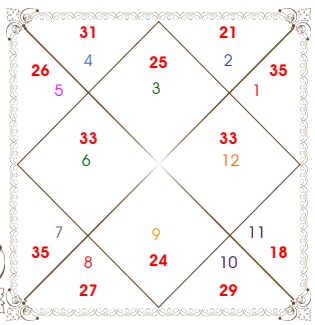

दशमांश कुंडली

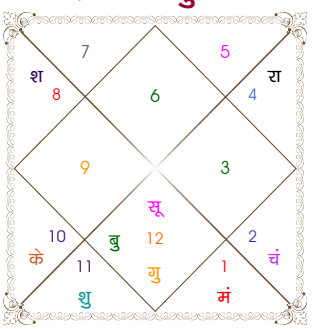

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आप शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, गण राक्षस, नाड़ी आद्य, योनि अश्व तथा वर्ग मेष होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "स" या "सा" से प्रारम्भ होगा यथा- सतवीर, सतनाम आदि।

आप ठंड से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे तथा इसे सहन करने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप में पूर्ण साहस की प्रधानता रहेगी एवं जीवन में सदैव सांसारिक कार्यों को करने के लिए उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। कभी कभी आप स्वभाव से कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे। आप एक चतुर एवं दक्ष व्यक्ति होंगे एवं चतुराई से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करने में सफलता अर्जित करेंगे। इससे अन्य लोगों में आपके प्रभाव में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी एवं उनमें आपको सम्मान एवं आदर की भी प्राप्ति होती रह,गी। इसके अतिरिक्त शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में भी अपप समर्थ रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष विज्ञान में भी आपकी नैसर्गिक रूचि तथा श्रद्धा रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक आप इसका ज्ञानार्जन भी करेंगे। आप शान्त एवं सुशील स्वभाव के पुरूष होंगे तथा हिंसा के भावों का आपमें प्रायः अभाव रहेगा। इसके साथ ही अल्प मात्रा में भोजन करना आपको अच्छा लगेगा तथा इसके अनुपालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगे।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आप के पास धन सम्पत्ति विपुल मात्रा में रहेगी तथा समाज में एक धनवान पुरूषके रूप में आप ख्याति अर्जित करेंगे। लेकिन आप में कंजूसी की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी अतः धन को उचित व्यय करने की अपेक्षा उसके संचय के प्रति आप अधिक ध्यान एवं तत्परता का परिचय देंगे। महिलावर्ग के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनसे आपके संबंध मैत्री पूर्ण संबंध भी रहेंगे। साथ ही आप विदेश में भी भ्रमण करेंगे एवं अधिकांश समय बाहर ही व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में कामभावना की भी अधिकता रहेगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से कहने में किसी भी प्रकार की हिचकिचाहट का प्रदर्शन नहीं करेंगे। अतः कई लोग आपसे अप्रसन्न तो कई प्रसन्न भी रहेंगे। साथ ही कई प्रकार के व्यसनों से भी आप युक्त रहेंगे तथा इनका आस्वादन भी करते रहेंगे। आपकी प्रवृति दुराग्रही भी रहेगी तथा अपनी ही बात को सत्य एवं सार्थक सिद्ध करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

कुम्भ राशि में पैदा होने के कारण आपकी नाक ऊंची होगी तथा मुख एवं मस्तक का आकार भी विस्तृत रहेगा। साथ ही आपके हाथ, पैर एवं कमर भी स्थूलाकृति के रहेंगे। आपका शरीर रूक्षता से युक्त होगा परन्तु शारीरिक स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा। रूक्षता से आपके सौन्दर्य पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप के सामाजिक संबंध विस्तृत होंगे। आपकी प्रवृति विद्रोही भी रहेगी तथा समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे। इसके साथ ही आप स्वभाव से उग्र भी रहेंगे एवं शीघ्र उत्तेजित भी होंगे। धर्म के प्रति श्रद्धा का भाव भी आपके मन में रहेगा। आप में आलस्य का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा शिल्प विद्या या चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इसमें आप विशेष योग्यता प्राप्त करेंगे। साथ

ही इसके द्वारा समाज में आपको यश की भी प्राप्ति हो सकेगी। इसके अतिरिक्त यदा कदा आप मानसिक कष्टानुभूति भी करेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विविध प्रकार के शास्त्रों का आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानर्जन करेंगे तथा समाज में एक विद्वान के रूप में प्रतिष्ठा एवं सम्मान अर्जित करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। आप शान्त स्वभाव से युक्त रहेंगे तथा हिंसक या उग्रता का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप अप्रत्यक्ष रूप से पापकर्मों को भी सम्पन्न करेंगे अथवा अपना इनमें सहयोग प्रदान करेंगे। यात्रा तथा भ्रमण के प्रति आप शुरू से ही रूचिशील तथा समर्पित रहेंगे। अतः आपका अधिकांश समय इसी पर व्यतीत होगा। यदा कदा आप धनाभाव से भी व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी आपके मन में रहेगी तथा इसके लिए आप सदैव यत्नशील तथा तत्पर रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में हमेशा उतार चढाव आते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन तथा पुष्पादि के प्रति भी आप आकर्षित रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका उपयोग करते रहेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे परन्तु अन्य विद्वानों को आप यथोचित सम्मान प्रदान नही करेंगे। इससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी इसके साथ ही आप शिष्टाचार के नियमों का भी पालन करते रहेंगे।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आपको जीवन में प्रायः सफलता एवं विजय अर्जित होती रहेगी तथा शुद्धाचरण का नित्य यत्नपूर्वक पालन भी करते रहेंगे इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित एवं प्रसन्न रहेंगे एवं आपके आचरण को अनुकरणीय समझेंगे। धन वैभव का आपके पास अभाव कम ही रहेगा

अन्यथा इससे आप सुसम्पन्न ही रहेंगे। गुरूजनों या श्रेष्ठ आदरणीय लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा का भाव रहेगा एवं सदैव इनकी सेवा एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। महिलाओं में भी लोकप्रिय होंगे तथा यथा समय उनकी सेवा या सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपका परिवार विशाल रहेगा तथा जाति या वर्ग के लोगों की भलाई अथवा सम्मान के लिए कार्यों को आप प्रयत्नपूर्वक सिद्ध करेंगे अतः बन्धु वर्ग में आप अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं सम्माननीय रहेंगे। इस प्रकार आप सर्वप्रकार के सद्गुणों से युक्त रहकर जीवन में इनका पालन करके सुखानुभूति करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन दीर्घाकार रहेगी एवं नसें भी शरीर से बाहर दिखाई पड़ेगी। समाज में अन्य महिलाओं से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनमें पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्रवर्ग के प्रति आपका विशेष स्नेह तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा उनकी सहायता के लिए हमेशा तैयार रहेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऊध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप स्वभाव से ही दानशील प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा जीवन में अवसरानुकूल यथाशक्ति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे। आप में कृतज्ञता की भावना भी पूर्ण रूप से रहेगी तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप हृदय से उनका आभार भी प्रकट करेंगे। इसके साथ ही अन्य लोगों की भलाई के कार्यों में भी आप यत्नपूर्वक अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। साथ ही आप नाना प्रकार के वाहन साधनो से सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर एवं दर्शनीय भी रहेगी एवं बुद्धि भी सरलता से युक्त रहेगी तथा आप किसी के साथ भी धोखा या प्रपंच नही करेंगे। इस प्रकार अपने स्नेह युक्त व्यवहार तथा अच्छे कार्यों के द्वारा समाज में सम्मान तथा लोकप्रियता अर्जित करेंगे एवं स्वभुजबल से धनार्जन करेंगे तथा साहस पूर्वक समस्त कार्यकलापों को सम्पन्न करके जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।

मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी कभी कभी अधिक बोलने की रहेगी। साथ ही आपके हृदय में करुणा के भाव की न्यूता भी रहेगी लेकिन आप एक साहसी पुरूष होंगे। अतः साहस पूर्वक अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप में क्रोध के भाव की भी अधिकता रहेगी। साथ ही आपकी प्रवृति कलह एवं विवाद में भी रहेगी तथा अन्य जनों से आपके विवाद होते रहेंगे। इहके साथ ही शारीरिक बल से भी आप युक्त रहेंगे।

जीवन में कभी कभी आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता की भी अनुभूति कर सकते हैं। आपको शारीरिक स्वरूप में आकर्षण भी मध्यम ही रहेगा। कभी कभी आप अपने सम्भाषण में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। बाह् दवाब या हस्तक्षेप आप को बिलकुल भी अच्छा नहीं लगेगा। आप सद्गुणों से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे तथा वीरता एवं साहस पूर्वक अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आप एक तेजस्वी व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपकी तेजस्विता से प्रभावित रहेंगे एवं आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही वीणा या अन्य यंत्रो को बजाने में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप निपुणता भी प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप सभी लोगों के विश्वास पात्र भी रहेंगे।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त

करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदाता रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग तथा वणिज करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक

सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हश मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की श्रद्धापूर्वक पूजा करनी चाहिए एवं शनिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, पंचधातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शारीरिक व्याकुलता भी दूर होगी। साथ ही समस्त अशुभ फलों का प्रभाव खत्म होकर शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।